बिश्केक में कूटनीति

क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति व आर्थिकी में उथल-पुथल के वर्तमान माहौल में किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की शिखर बैठक बहुत महत्वपूर्ण है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां एक ओर अधिक आत्मविश्वास के साथ क्षेत्रीय सहयोग एवं विकास पर अपनी दृष्टि को अभिव्यक्त करेंगे, वहीं उन्हें चीन और रूस तथा अमेरिका के प्रति भारत के संतुलित रुख को इंगित करने की चुनौती भी होगी. रूस और चीन के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर करने के अलावा मध्य एशियाई देशों के साथ मिल कर क्षेत्रीय विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में इस मंच के विशेष महत्व को प्रधानमंत्री रेखांकित कर चुके हैं. ऐसी संभावना है कि अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध तथा अमेरिका संरक्षणवादी नीतियों के संदर्भ में रूस एवं मध्य एशियाई देश इस सम्मेलन में चीन के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करेंगे. भारत भी व्यापार युद्ध को लेकर चिंतित है तथा प्रधानमंत्री समेत सरकार से जुड़े अहम लोगों ने अक्सर अंतरराष्ट्रीय व्यापार-वाणिज्य के नियमों पर आधारित संचालन की पक्षधरता की है. अमेरिका ने आयात-निर्यात शुल्कों को लेकर भारत पर भी दबाव बढ़ाया है, परंतु ऐसी आशा बहुत कम है कि भारत इस प्रकरण में सीधे तौर पर चीन के साथ खड़ा होगा, क्योंकि अमेरिका से द्विपक्षीय संबंधों को लेकर भारत को भरोसा है कि उसे एक कारक के रूप में चीन की आवश्यकता नहीं है तथा वह अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप दोनों देशों के साथ सहभागिता निभा सकता है. इसी भरोसे का परिणाम है कि इस महीने भारत के दौरे पर आ रहे अमेरिकी विदेश सचिव माइक पॉम्पियो ने परस्पर संबंधों को नयी ऊंचाई देने के लिए 'बड़े विचारों एवं बड़े अवसरों' को चिह्नित किया है. शुल्कों पर रार के समाधान की आवश्यकता के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र एवं सामरिक आदान-प्रदान में दोनों देशों के बीच सहकार की संभावनाओं ने भी भारत और अमेरिका की निकटता बढ़ाने में योगदान दिया है. प्रधानमंत्री की छवि तथा चीन और अमेरिका के साथ भारत के कूटनीतिक और आर्थिक सहयोग को बढ़ाने में राजनयिक के रूप में उल्लेखनीय भूमिका निभा चुके एस जयशंकर के लिए द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित किये बिना अमेरिका और चीन के साथ संतुलन बनाना मुश्किल नहीं होगा. भारत के लिए एक चुनौती यह भी है कि उसके क्षेत्रीय लक्ष्यों और मध्य एशियाई देशों की आकांक्षाओं के साथ तालमेल कैसे बैठाया जाए? सम्मेलन में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान भी भाग ले रहे हैं. भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक पाकिस्तान सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई नहीं करता है, किसी द्विपक्षीय संवाद की गुंजाइश नहीं है. इसके बावजूद देश-दुनिया के पर्यवेक्षकों की निगाहें दोनों नेताओं पर जमी रहेंगी. आतंकवाद पर अंकुश के मुद्दे पर प्रस्तावित रणनीति का दबाव पाकिस्तान पर होगा. बहरहाल, बिश्केक सम्मेलन क्षेत्रीय सहयोग की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर साबित हो सकता है.

बिश्केक सम्मेलन क्षेत्रीय सहयोग की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर साबित हो सकता है.

भारत में मुरझातीं कम्युनिस्ट पार्टियां

सुरेंद्र किशोर
वरिष्ठ पत्रकार
surendarkishore@gmail.com

सन् 1929 के चर्चित मेरठ षड्यंत्र केस ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाया, तो 2007 की सिंगूर-नंदीग्राम की घटनाओं ने साम्यवादी दलों के अवसान की बुनियाद रख दी. मेरठ षड्यंत्र केस में कई कम्युनिस्ट नेता आरोपित थे. आज तो कम्युनिस्ट दलों की चुनावी दुर्दशा देख कर उनके कुछ राजनीतिक विरोधियों को भी उन पर दया आ रही होगी. याद रहे कि विशेष आर्थिक जोन के लिए जबरन भूमि अधिग्रहण के कारण सिंगूर-नंदीग्राम में वाम मोर्चा सरकार के खिलाफ बड़ा जन आंदोलन हुआ था.

भारत जैसे गरीब देश में कम्युनिस्टों की दिन-प्रतिदिन पतली हो रही हालत के लिए आखिर कौन जिम्मेदार रहे? कम्युनिस्ट नेतृत्व, कम्युनिस्ट कार्यकर्ता, सर्वहारा, आम जन, आर्थिक उदारीकरण या कोई अन्य तत्व? इसी के साथ यह सवाल भी पूछा जा रहा है कि इस देश में कम्युनिस्ट दलों का पुनरुद्धार अब संभव भी है या नहीं. लगता है कि जिस तरह कम्युनिस्ट आंदोलन के उत्थान के लिए मुख्यतः उसके नेतृत्व को श्रेय जाता है, तो उसके अवसान के लिए भी तो उसी को जिम्मेदारी लेनी होगी. पुनरुत्थान के मामले में कुछ भी भविष्यवाणी करना जोखिम भरा काम है. इस देश की कम्युनिस्ट पार्टियां शुरू से ही भारत भूमि के अनुसार खुद को कभी पूरी तरह ढाल नहीं सकी. दुनिया के अन्य कम्युनिस्ट देश तो अपनी भूमि के एक-एक इंच की रक्षा के मामले में 'राष्ट्रवादी' रहे हैं. पर, हमारे देश के कम्युनिस्ट रक्षा में लगी सरकार को 'अंध राष्ट्रवादी' तो कभी हिंदूवादी कहने लगते हैं. दूसरे देश के कम्युनिस्ट इस बात की चिंता करते हैं कि उनके देश को कौन-कौन से देश घेरने की कोशिश कर रहे हैं. पर केरल सीपीएम के सचिव कहते हैं कि अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत मिल कर चीन को घेरना चाहते हैं. सामाजिक न्याय यानी पिछड़ा आरक्षण की कोई अवधारणा कम्युनिस्ट शब्दकोष में नहीं है. कम्युनिस्टों ने लगातार इस रणनीति पर काम किया कि सांप्रदायिक तत्वों को सत्ता में आने से रोकने के लिए किसी भी राजनीतिक दल का, चाहे वह कितना भी भ्रष्ट, वंश-तंत्रवादी और अक्षम हो, साथ दिया जाना चाहिए. पर क्या वे भाजपा को रोक पाए?

नब्बे के दशक तक यहां के कम्युनिस्टों के एक बड़े तबके की स्थानीय रणनीति इसी आधार पर बनती थी, जिससे सोवियत संघ या चीन के हितों को नुकसान न हो. अब भला ऐसी नीतियां इस देश की कितनी जनता को प्रभावित कर सकती हैं? पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु सरकार ने भूमि सुधार के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठाये थे. उससे वाम मोर्चा को भारी जनसमर्थन मिला. तब अधिकतर कम्युनिस्टों के साफ-सुथरे निजी जीवन ने भी लोगों को प्रभावित किया. पर, लंबे समय तक सत्ता में बने रहने के कारण किसी भी दल में जो कमजोरियां पनपती हैं, उनके शिकार होने से कम्युनिस्ट भी बचे नहीं रहे. पश्चिम बंगाल की वाम सरकार की अलोकप्रियता बढ़ती गयी. शासन के अंतिम वर्षों में बूथ जाम के जरिये चुनाव जीता गया, पर वह कब तक चलता?

कम्युनिस्ट नेताओं में एक खास खूबी है. वे यदा-कदा अपनी गलतियों को भरसक सार्वजनिक रूप से स्वीकारते हैं. उन्हें दुरुस्त करने की कोशिश भी करते हैं. पर एक समय ऐसा आया, जब कम्युनिस्ट नेतृत्व ने सुधार की ताकत खो दी. इसे किसकी विफलता मानें? साल 2009 में सीपीएम के महासचिव प्रकाश करात ने कहा कि सत्ता और पैसों की लालच ने पश्चिम बंगाल के कम्युनिस्ट आंदोलन के शानदार इतिहास को धूमिल कर दिया. उधर सीताराम येचुरी ने 2016 में अपनी ही पार्टी की केरल सरकार में जारी भाई-भतीजावाद के खिलाफ आवाज उठायी. उधर ज्योति बसु ने 1994 में कहा कि 'भारत की विशेष परिस्थितियों में जाति भी महत्वपूर्ण है, उस पर ध्यान दिया जाना चाहिए.' क्या ध्यान दिया गया? हां, 2009 में लोकसभा चुनाव में हार के बाद पश्चिम बंगाल सरकार ने कुछ कदम जरूर उठाये. पर तब तक देर हो चुकी थी. साल 2011 में राज्य की सत्ता वाम मोर्चा के हाथों से निकल गयी. सीपीआइ के महासचिव एबी वर्धन ने तब कहा था कि 'भ्रष्टाचार और अहंकार ने वाम मोर्चा को आम जन से अलग कर दिया और हम चुनाव हार गये. वामपंथी खुद को बदलें.' कतिपय वाम नेताओं ने पहले तो वोट बैंक को मजबूत करने के लिए पश्चिम बंगाल में बांग्लादेशियों के अवैध प्रवेश का रास्ता साफ किया, पर जब पश्चिम बंगाल के सात जिलों में शासन चलाना कठिन हो गया, तो राजनीतिक कार्यपालिका की तरफ से कहा गया कि राज्य में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ सक्रिय हो गयी है. वाम नेताओं के इस आरोप का अल्पसंख्यक समुदाय के नेताओं ने सख्त विरोध किया. ममता बनर्जी ने उन्हें हाथों-हाथ लिया. इस तरह अल्पसंख्यक मतदाता धीरे-धीरे ममता की ओर चले गये. अल्पसंख्यकों के बीच के अतिवादियों के तुष्टीकरण मामले में ममता वाम से आगे निकल गयीं. आम अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए दोनों में से किसी ने कुछ नहीं किया. उसका राजनीतिक खामियाजा अब ममता बनर्जी भी भुगत रही हैं.

यदि हिंदी प्रदेशों में वाम दल मजबूत रहे होते, तो बंगाल-केरल-त्रिपुरा के नुकसानों की क्षतिपूर्ति अखिल भारतीय स्तर पर हो सकती थी. पर नेतृत्व की अदूरदर्शी नीतियों के कारण कभी बिहार में मजबूत रही सीपीआइ भी समय के साथ कमजोर होती चली गयी. मंडल आंदोलन और मंदिर आंदोलन के कारण भी कम्युनिस्ट पार्टियां कमजोर हुई हैं. अनेक वर्णों के बदले सिर्फ दो वर्गों की उपस्थिति में विश्वास करनेवाली कम्युनिस्ट पार्टियों को हिंदी प्रदेशों में मंडल आंदोलन ने नुकसान पहुंचाया है. वहीं बिहार में तो लालू प्रसाद के धृतराष्ट्र आलिंगन में कम्युनिस्ट चकनाचूर ही हो गये.

हिंदी पट्टी में अपेक्षाकृत अधिक गरीबी भी है. गरीबों के बीच कम्युनिस्टों के प्रसार की गुंजाइश अधिक रहती है. इसके बावजूद यदि कम्युनिस्ट पार्टियां मुरझा गयीं, तो इसके लिए इन दलों की रणनीतियां और कार्य नीतियां ही जिम्मेदार रही हैं. साठ-सत्तर के दशक तक कम्युनिस्ट व सोशलिस्ट दलों के नेता व कार्यकर्ता हर साल कोई न कोई आंदोलन करके जेल जाते थे. पर, लगता है कि उनमें संघर्ष का पहले जैसा माद्दा अब नहीं बचा. नये लोग दल से जुड़ नहीं रहे हैं. याद रहे कि संघर्ष और शिक्षण के कारण जनता की नयी जमात पार्टी से जुड़ती है. पर, दुर्भाग्यवश भारत जैसे गरीब देश में, जहां विषमता बढ़ती जा रही है, कम्युनिस्ट पार्टियां मुरझा रही हैं.

गरीबों के बीच कम्युनिस्टों के प्रसार की गुंजाइश अधिक रहती है. इसके बावजूद यदि कम्युनिस्ट पार्टियां मुरझा गयीं, तो इसके लिए इन दलों की रणनीतियां और कार्य नीतियां ही जिम्मेदार रही हैं.

चंद्रयान-2 : चांद पर जीवन की खोज

अमिताभ पांडेय
खगोल विशेषज्ञ
amitabh.pandey@gmail.com

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हम लगातार प्रगति कर रहे हैं. हमने चंद्रयान भेजा, मंगलयान भेजा, और अब हम चंद्रयान-2 भेजने के लिए तैयार हैं. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चांद पर अपना उपग्रह 'चंद्रयान-2' भेजने का ऐलान कर दिया है और 15 जुलाई को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से इसे छोड़े जाने की तारीख तय की है. अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत अब स्वतंत्र रूप से बहुत सक्षम और समृद्ध हो चुका है. चंद्रयान-2 मिशन हमारी अगली बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है.

साल 2008 में चांद पर जब चंद्रयान-1 भेजा गया था, तभी यह तय हो गया था कि अब अगले मिशन में एक लैंडर और रोवर दोनों होंगे, जो चांद की सतह पर दो सप्ताह तक काम करेंगे. रोवर का अर्थ है एक रोबोटिक गाड़ी, जो ऑटोमेटिक होती है, जो चंद्रमा की सतह पर चलेगी और वहां की सारी जानकारी इकट्ठा करके यहां पृथ्वी पर भेजेगी. पहले यह था कि लैंडर रूस से लिया जायेगा और रोवर एवं ऑर्बिटर हमारा होगा, लेकिन जब रूस ने समय पर डिलिवरी नहीं दी, तब इसरो ने तय किया कि अब लैंडर, रोवर और ऑर्बिटर सब भारतीय होगा. इस एतबार से देखें, तो चंद्रयान-2 मिशन में हम पूरी तरह अपनी तकनीकी क्षमताओं पर निर्भर हैं.

भारत में बनी जीएसएलवी मार्क-3 का काम होता है संचार उपग्रहों को उनकी कक्षा में प्रक्षेपित करना. इसकी खासियत यह है कि यह अपने साथ तीन हजार किलोग्राम से ज्यादा वजनी संचार उपग्रह को प्रक्षेपित कर सकता है. चंद्रयान-2 मिशन में लैंडर, रोवर और ऑर्बिटर इन तीनों का वजन 3,877 किलोग्राम है. इस मिशन का डिजाइन यह है कि पहले इसे इसकी कक्षा में भेजा जायेगा, जो पृथ्वी से तकरीबन चालीस हजार किमी पर होगा. एक बार इसकी कक्षा में चंद्रयान-2 के स्थापित होने के बाद इसके ऑर्बिट को बढ़ाया जायेगा और धीरे-धीरे वह इतना बढ़ जायेगा कि वह चंद्रमा की कक्षा में पहुंच जायेगा. यह सबसे मुश्किल काम है. इसलिए वहां स्थापित होने के बाद लैंडर और रोवर को उतारा जायेगा. चंद्रयान-2 मिशन के तहत लैंडर और रोवर 70 डिग्री के अक्षांश पर चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेंगे, जहां आज तक दुनिया के किसी देश ने कोई मिशन नहीं किया है. इस एतबार से पूरी दुनिया में भारत एक बड़ी उपलब्धि हासिल करने जा रहा है.

चंद्रयान-2 के उद्देश्य को समझना-जानना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है. ऐसा माना जाता रहा है कि अगर हमें अंतरिक्ष के क्षेत्र में और भी आगे काम करना है, तो चांद ही वह अगला पड़ाव है, जहां से हम जीवन को एक नयी दिशा दे सकेंगे. यानी अगर हमें अंतरिक्ष में बस्तियां बसानी है, तो सबसे पहले चांद पर अपना ठिकाना बनाना होगा. चांद पर ठिकाना ऐसा होगा, जिसमें वैज्ञानिक, इंजीनियर और तकनीक-विज्ञान के क्षेत्रों काम करनेवाले लोगों को वहां ले जाना होगा, जो वहां रहकर एक्सपेरिमेंट करेंगे और जीवन की उपलब्धता तलाशेंगे. इसके पहले चांद की आबोहवा की जानकारी बहुत जरूरी है, जिसके लिए चंद्रयान-2 एक बेहतरीन भूमिका निभायेगा. चांद पर पानी, हवा, विकिरण, रासायनिक तत्व आदि किस हालत में और कितनी मात्रा में हैं, इन सबकी जानकारी पहले जरूरी है. दुनिया में या अंतरिक्ष में कहीं भी जीवन के लिए पानी बहुत जरूरी है. अगर पानी होगा, तो उसमें से ऑक्सीजन यानी हवा को प्राप्त किया जा सकता है. चांद के दक्षिणी ध्रुव में पानी के भंडार की खोज हुई है, इसलिए वहां जीवन की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता.

चंद्रयान-1 जब भेजा गया था, तो सबसे पहले उसी ने चांद पर पानी की उपलब्धता की जानकारी दी थी. दरअसल, दक्षिणी ध्रुव के कुछ हिस्सों में बर्फ जमी रहती है, क्योंकि वहां सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुंचती है. इसलिए वहां पानी के भंडार पाये गये हैं. सबसे पहले हमारे चंद्रयान-2 मिशन का लैंडर वहां उतरेगा, जिसमें कई तरह के इंस्ट्रूमेंट हैं, जो वहां सोलर विंड, पराबैंगनी किरणें, जमीन की मिट्टी में छुपे मिनरल और तत्व आदि की जानकारी इकट्ठा करेंगे. उसमें एक इंस्ट्रूमेंट ऐसा भी है, जो लेजर रेज फायर करके रोशनी पैदा करेगा और फिर तत्वों की जानकारी देगा. इन सब जानकारियों के बाद ही यह तय हो पायेगा कि वहां जीवन के लिए बाकी जरूरी पदार्थों की कितनी मात्रा को धरती से ले जाने की जरूरत होगी.

चंद्रयान-2 मिशन में कुल 978 करोड़ रुपये की लागत आयेगी. आज की भारतीय अर्थव्यवस्था के हिसाब से यह कोई बड़ी राशि भी नहीं है. यानी कह सकते हैं कि एक हवाई जहाज खरीदने की राशि में ही हमारा पूरा चंद्रयान-2 मिशन पूरा हो जायेगा. चंद्रमा पर गुरुत्वाकर्षण काफी कम है, इसलिए वहां हवा नहीं है. इसलिए हो सकता है कि हवा को यहां से ले जाने की जरूरत पड़े या फिर वहां मौजूद पानी पर सोलर रेडिएशन का इस्तेमाल करके ही ऑक्सीजन और हाइड्रोजन निकालनी होगी. ऑक्सीजन का इस्तेमाल हवा के रूप में किया जा सकता है और हाइड्रोजन का इस्तेमाल ईंधन के रूप में. कुल मिला कर देखें, तो चंद्रयान-2 मिशन से बहुत सी जानकारियां हासिल होनेवाली हैं, जिनसे यह चांद पर जीवन की संभावना पर मुहर लग जायेगी.

(वसीम अकरम से बातचीत पर आधारित)

चंद्रयान-1 जब भेजा गया था, तो सबसे पहले उसी ने चांद पर पानी की उपलब्धता की जानकारी दी थी. अब चंद्रयान-2 मिशन से बहुत-सी जानकारियां हासिल होनेवाली हैं, जिनसे यह चांद पर जीवन की संभावना पर मुहर लग जायेगी.

बोधि वृक्ष

सुख प्राप्ति

मनुष्य अगर वास्तव में सुखी होना चाहता है, तृप्ति चाहता है, तो उन्हें परम पुरुष की खोज करनी होगी. सिवाय उनके कोई और वस्तु उन्हें तृप्ति नहीं दे सकती. इसी सुख प्राप्ति की चाह से धर्म-जीवन का प्रारंभ हुआ. यह जो परम पुरुष को पाने का प्रयास है और यह जो धर्म-साधना है, वह सबको करनी चाहिए. इसलिए मनुष्य को यदि सही इंसान बनना है, तो धर्म-जीवन में उन्हें आना है. मानव मन की यही विशेषता है कि अल्प से उसे संतोष नहीं मिलता है, अनंत को ही वह चाहता है. सुख जहां अनंत तक पहुंच गया है, उस सुख को आनंद कहते हैं, अर्थात मनुष्य वास्तव में सुख नहीं चाहता है, चाहता है आनंद. सुख प्राप्ति की चाह से प्रेरित होकर वह अनंत की राह अपनाते हैं. तुम लौकिक जीवन में देखोगे कि लौकिक सुख में भी कभी-कभी सुख की तरंगें इतनी अधिक हो जाती हैं कि अनुभव यह होता है कि बाहर चारों ओर सुख की तरंगें उठ रही हैं. उस दशा में स्वयं को संभालना कठिन हो जाता है. अधिक सुख होने से आदमी चिल्ला पड़ता है, कूदने लगता है. कभी-कभी वह हंसता है, कभी-कभी वह रोने भी लगता है. उसी प्रकार का सुख जब बराबर रहे, तो उसे कहते हैं आनंद अर्थात उनके मन का जो सुख है, वह मन के अंदर सीमित नहीं रह पाता. सुख सीमित रहता है, किंतु कभी-कभी अधिक हो जाने से वह बाहर निकल पड़ता है. परम पुरुष हैं आनंद के आधार. इसलिए परम पुरुष की प्राप्ति से मनुष्य को आनंद मिलता है. अध्यात्मिक जगत में चलते वक्त जो मानसिक तथा स्थूल जगत के प्रति अपना कर्तव्य सही तरीके से करेते रहेंगे. अध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति के लिए निश्चय ही मानसिक क्षेत्र या भौतिक वाह्य जगत की उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा. वह दृढ़ता के साथ अध्यात्मिक क्षेत्र में चलेगा और अध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति के साथ ही उनमें साहस और सत्यनिष्ठा का उदय होगा, जिसका उपयोग समस्त संसार के मानसिक कल्याण के लिए हो सकेगा तुम धर्म जीवन में हो- यही है मानव जीवन की पराकाष्ठा और यही है मानव जीवन की पहचान.

श्रीश्री आनंदमूर्ति

आपके पत्र

जल नहीं, तो कल नहीं

हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या जल संकट का है और गर्मी में जिस दुर्दिन से सभी गुजर रहे हैं, हम उससे भी वाकिफ हैं. सच्चाई है कि आज भी देश का एक बड़ा तबका पानी के लिए संघर्ष कर रहा है. पानी के लिए घंटो लाइन में लगना पड़ता है. एक बोतल पानी पंद्रह-बीस रुपये से कम में नहीं मिलता. आज हम सभी के लिए जरूरी है जल संरक्षण करना यानी जल की बर्बादी को कम करना और उसका पुनः उपयोग करना. जल संकट का असर न सिर्फ मनुष्य पर, बल्कि समस्त जीव-जंतुओं पर पड़ता है. इसलिए सिंचाई में भी हम ड्रीप सिंचाई का प्रयोग कर पानी की बर्बादी को कम कर सकते है. कई इलाके आज जलविहीन हो चुके हैं. भूमिगत जल का स्तर भी तेजी से नीचे खिसकता जा रहा है. अगर जल संरक्षण पर हम सभी ने गंभीरता से विचार नहीं किया, तो यह समस्या विकराल रूप ले लेगी. समाज के हर तबके को जल के महत्व को समझना ही होगा, क्योंकि जल नहीं तो कल नहीं.

श्रीकांत दास, मधुपुर, देवघर

बदलते रिश्ते और रास्ते !

सियासत में रिश्ते और रास्ते कब बदल जाते हैं, कहना मुश्किल है. सोचा न था कि सियासी पंडितों के सारे अनुमान इतनी जल्दी गलत हों जायेंगे. गेस्ट हाउस कांड को एक झटके में भुलाने वाली बुआ ने लखनऊ में मिलाये हाथों को ऐसा झटक दिया कि 'बबुआ' न घर का रहा, न घाट का. जनता की दो आंखों ने कई बार बारह हाथो को हवा में मिलते देखा है. तजुर्बों ने लोगों को मेल और मिलावट में फर्क करना सिखा दिया है. संकट की घड़ी में हाथी को भी कमल उठाये गुहार लगाते देखा गया है. वहीं, सोशल इंजीनियरिंग पर शोध करते सपा प्रमुख गणित व केमिस्ट्री के पाठों में पिछड़ते देखे गये. यही वजह थी कि सपा की नाव भी वहां डूबी, जहां पानी कम था. साइकिल अब सवारी के लायक नहीं रही. लिहाजा सेहत के लिए 'बापू' कतई हानिकारक नहीं है.

एमके मिश्रा, रातू, रांची

बढ़ते सड़क हादसे

आज देश में राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर ग्रामीण पथ तक का बिछा जाल देश की तरक्की का आईना है, परंतु राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर न किया जाना गंभीर चिंता का विषय है. छह लेन या आठ लेन के राजमार्गों के निर्माण के लिए बहुत अधिक जमीन की आवश्यकता होती है, जो राज्य की सरकारें उपलब्ध कराने में असफल हैं. केंद्रीय योजना के क्रियान्वयन के ऊपरी दबाव में राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और उनके अंतर्गत कार्य करने वाले ठेकेदार नियमों की अनदेखी करते रहते हैं. पर्याप्त मात्रा में लिंक रोड, सर्विस रोड, पार्किंग, वाहन पड़ाव, दोपहिया वाहन पथ, पैदल पथ, उचित जेब्रा क्रॉसिंग आदि का न होना, पुल-पुलिया की मजबूत बैरिकेटिंग का अभाव, उचित दूरी पर एंबुलेंस की अनुपलब्धता इत्यादि अनेकों कमियों की वजह से सड़क दुर्घटना व उससे बड़ा नुकसान आम बात हो गयी है. ऐसे में संयमित ड्राइविंग व जागरूकता जरूरी है.

देवेश कुमार 'देव', गिरिडीह

कुछ अलग

दूसरों की और अपनी गलतियां

संतोष उत्सुक
वरिष्ठ व्यंग्यकार
santoshutsuk@gmail.com

यह सम्मान की बात है कि समाज के प्रतिष्ठित, वैभव संपन्न, उच्चतम वर्ग के लोग अपनी विशेषताएं समय-असमय आम देशवासियों को बताते रहते हैं. बड़े लोगों द्वारा छोटे लोगों के लिए बनायी गयी शासन व्यवस्था में यह प्रक्रिया जरूरी भी है. खास लोग समझाते हैं और आम लोग समझदारी से बात को समझ कर, प्रेरणा लेने का कर्तव्य पालन करते हैं. इसी लोकतांत्रिक राह पर चल कर परिवार, समाज और देश का निरंतर विकास एवं निर्माण प्रशस्त होता है. पिछले दिनों देश के महालोकप्रिय, बिगबॉस टाइप व प्रसिद्ध पशुप्रेमी ने फरमाया है कि वे दूसरों की गलतियां कभी नहीं भूलते. उन्होंने समाज के प्रचलित नियमों के अनुसार समझा दिया कि अब अपनी गलतियां याद न रखने, दूसरों की सारी गलतियां तफ्सील से याद रखने, किसी भी तरह हर सजा से बच निकलने और दूसरों को तुरंत सजा देने या दिलवाने का समय है.

हम तो कभी कोई गलती करते ही नहीं, गलती करने के लिए दूसरे लोग तो हैं ही, यही धारणा अपनाने का जमाना है. नायक व व्यक्तिपूजक समाज में ऐसा करना संस्कृति का हिस्सा है. कहा भी गया है कि जो व्यक्ति अपनी गलती याद न रखे, वह जीवन में हमेशा आगे बढ़ता जाता है. सुबह का भूला शाम को वापस आ जाये, तो उसे भूला नहीं कहते, टाईप चीजों की अब जरूरत नहीं रही. दूसरों की गलतियां कभी न भूलनेवाले युगपुरुष ने अपनी गलती भुलवाने व दफनाने के लिए दूसरों के कई साल व अपने करोड़ों खर्च कर दिये, लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि अभी तक उसने स्वयं आकर यह बयान नहीं दिया कि उसने अपनी जान देने के लिए, स्वयं अपने हाथों से ही अपना गला दबाया था. लगता है 'क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात, का रहीम को घटयो जो भृगु मारी लात' जैसी पुरानी बातों का अब अर्थ बदल गया है. तो क्या अब इसे नये संदर्भों में ऐसे नहीं मानना पड़ेगा, 'क्षमा छोटन को चाहिए बड़न को उत्पात, क्या जानवर का घिस गया मर्द जो मारी घात'?

कुछ जानवर मरकर भी इंसानों से पंगा लेते रहते हैं, लेकिन यह समझना जरूरी है कि आप पंगा ले किससे रहे हैं. छोटन लोगों को क्या पता कि बड़े इंसानों की बस्ती में रहनेवाले महाजन मूलधन से पहले सूद वसूलते हैं और अब महा जन वही है, जो सब को चूना लगा दे और खुद को चूना न लगने दे. दूसरों को उनके ही घर में घेर ले और बिना उनकी गुस्ताखी के अपना हिसाब चुकता कर ले. इतिहास ही नहीं, वर्तमान भी गवाह है कि गलतियां वही याद रखता है, जो सजा देना चाहता है. ऐसा करवाने में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक सफलता उनकी मदद करती है. जिनके पास सांस और आस के सिवा कुछ भी न बचा हो, वह अपनी गलतियों को कोसते रहते हैं या फिर व्यवस्था को. दूसरों की गलतियों को याद रखनेवाले और अपनी भुला देनेवाले व्यवस्था को जेब में रखने की कुव्वत रखते हैं. दूसरों की गलतियां याद रखने से याददाश्त भी सलामत रहती है.

देश दुनिया से

लीबिया में अभी शांति के आसार नहीं

लीबिया में दो महीने से अधिक समय से युद्ध चल रहा है. राजधानी त्रिपोली पर कब्जा जमाने के लिए जनरल खलीफा हफ्तार की सेना द्वारा चलाया गया त्वरित ऑपरेशन अब युद्ध की स्थिति में बदल गया है. इस संघर्ष में अब तक 600 से अधिक लोग मारे गये हैं, तीन हजार से अधिक घायल हुए हैं और करीब 90 हजार लोगों को विस्थापित होना पड़ा है. अंधाधुंध गोलाबारी के कारण हजारों रिहायशी इमारतें क्षतिग्रस्त या नष्ट हो गयी हैं. त्रिपोली में लगभग 30 लाख लोग अभी भी फंसे हुए हैं. इस युद्ध में अभी तक किसी की भी जीत नहीं हुई है. न ही गठबंधन सरकार की, न ही सेना की. राष्ट्रीय स्तर पर सरकार के साथ गठबंधन करनेवाले गुटों ने हफ्तार की सेना की बढ़त को रोक दिया है और त्रिपोली में त्वरित जीत की उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है. संयुक्त राष्ट्र ने दोनों पक्षों के बीच संघर्ष को रोकने के लिए कई बयान जारी किये हैं, लेकिन दोनों में से कोई भी पक्ष पीछे हटने या युद्ध विराम के लिए सहमत होने को तैयार नहीं है. सुरक्षा परिषद आम सहमति बनाने के लिए प्रस्ताव लाने में अब तक नाकाम रहा है, जिसका कारण लीबिया को लेकर खुद अंतरराष्ट्रीय समुदाय का बंटा होना है.

गुमा अल-गमाती

कार्टून कोना

प्रतिरोध हांगकांग

साभार : कार्टूनमूवमेंटडॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है